अपनी शक्तियों के स्टॉक द्वारा कमजोर ब्राह्मणों को शक्तिशाली बनाओ

आज बापदादा के पास चारों ओर का समाचार लेते हुए पहुँची। पहुँचते ही क्या देखा कि बापदादा ने अपने चारों तरफ के ब्राह्मण बच्चों के संगठन

को वतन में इमर्ज किया हुआ है। इतना अच्छा सफेद-सफेद वस्त्रधारी संगठन लग रहा था जैसे आकाश से फ़रिश्तों का संगठन वतन में पहुँच रहा है। संगठन का रूप एक-एक लाइन लगभग पौना (3/4) गोल माला के रूप में था। ऐसे लग रहा था जैसे अनेक चैतन्य मालायें बापदादा के गले में पड़ी हुई हैं। बापदादा भी बहुत शक्तिशाली स्वरूप में खडे होकर हर एक को दृष्टि दे रहे थे। थोड़े समय के बाद बापदादा बोले, सभी मीठे बच्चे साक्षीपन की सीट पर सेट होकर सब खेल देख रहे हो ना! सदा निर्भय, नि:संकल्प, स्वमानधारी बन अपनी शक्तियों द्वारा वायुमण्डल को शान्ति का सहारा दे रहे हो ना! सब बच्चे भी बहुत पॉवरफुल स्थिति से शक्ति रूप में खड़े थे। फिर बाबा बोले, बापदादा ने तो पहले ही इशारा दिया है कि अब बीच-बीच में यह एक तरफ हलचल दूसरे तरफ आपकी अचल स्थिति का खेल चलना ही है। आप के निर्भय, निर-व्यर्थ, निश्चय बुद्धि के पेपर होने ही हैं। इसलिए आप सब अनेक बार के निश्चय बुद्धि विजयी रत्न हो ना! चाहे युद्ध के स्थान पर हो, चाहे दूर हो लेकिन सदा यही स्मृति स्वरूप बनना है कि बाप और आप सदा कम्बाइन्ड हैं, एक अकेले नहीं है, दो साथ हैं क्योंकि अकेला देख माया अपना कमजोरी का वायब्रेशन फैलाती है। आप सब बच्चों का तो बाप से वायदा है कि सदा साथ हैं, साथ रहेंगे। इस दृढ़ता में एक परसेन्ट भी कम नहीं हो, तो स्वत: ही बापदादा छत्रछाया बन सहज सेफ कर लेंगे। याद रहे - नथिंग न्यू, नथिंग न्यू, नथिंग न्यू ………।

उसके बाद बाबा ने बहुत दिल से स्नेह भरी दृष्टि हर बच्चे को दी और वरदान का हाथ घुमाया। ऐसे मिलन मनाते सबको मर्ज कर दिया।

बाद में मैंने अपने को अकेला देखा। बापदादा ने पूछा क्या समाचार लाई हो? मैंने डबल फारेनर्स और दादी जानकी का संकल्प सुनाया। तो सुनते ही बाबा ने दादी जानकी और बड़ी दादी को अपनी गोदी में समा दिया और बोले, मेरे विशाल बुद्धि बच्चों को सर्व साथियों के साथ जो शुभ संकल्प आया है, वह ठीक है। समय के वायब्रेशन प्रमाण चाहे युद्ध कम,

ज्यादा होती रहे लेकिन उसके बाद भी वायुमण्डल भय और दरबदर का होगा, असहारे का होगा। इसलिए हर एक बच्चे को उस वायुमण्डल के बीच कमजोर ब्राह्मणों को शक्तिशाली बनाना ज़रूरी है। इसलिए हर निमित्त आत्मा जो बापदादा से बहुत रिफ्रेश हुई है, शक्तियों का स्टॉक जमा किया है, वह भल अपने-अपने स्थान में जा सकते हैं। लेकिन जाने का साधन रास्ता चेक कर सेफ्टी का प्रोग्राम बनायें। अभी भी बच्चों ने जो स्नेह, संगठन, संस्कार मिलन की शक्ति धारण की है वही शक्ति स्मृति दिलाती रहेगी और औरों को भी समर्थ बनाती रहेगी। ऐसे विशेष दोनों दादियों को और साथ में सर्व ब्राह्मणों को याद-प्यार देते विदाई दी। ओम् शान्ति।